ऑडियो नंबर–204 कम्पिला ओम् शांति 7.6.86 प्रातः क्लास

रिकॉर्ड चला है– धीरज धर मनुवा धीरज धर। बच्चों को बाप धैर्य दे रहे हैं। बच्चे भी जानते हैं, हमको धैर्य मिल रहा है। अभी दुःखधाम के दिन हैं। कलियुग को दुःखधाम, पतित धाम कहा जाता है। यहाँ सुख हो नहीं सकता। सुख होता ही है पावन दुनिया में। जब दुःख है, तब पुकारते हैं– हे पतित–पावन, आओ! आओ और हमको पावन दुनिया में ले चलो। ये बुलाने के और पावन दुनिया में ले जाने की इच्छा के संस्कार कहाँ से भरे? ज़रूर पहले कभी आए थे, पतितों को पावन बनाया था और बना करके पावन दुनिया में ले गए थे। कौन ले गए थे? एक तो कहते हैं– पतित–पावन परमात्मा बाप, जो हमको इस पतित दुनिया में आ करके पावन बना करके शांतिधाम में, पावन दुनिया में ले जाते हैं; लेकिन वो पावन देश है, वहाँ न सुख है और न दुःख है। निराकारी दुनिया है, जिसे कहते हैं– शांतिधाम। सुख नहीं है; लेकिन अभी बात हो रही थी किसकी? सुख होता ही है पावन दुनिया में। तो ज़रूर कोई और भी दुनिया है, जो पावन भी है और वहाँ सुख भी है; लेकिन वहाँ ले जाते हैं क्या? सुप्रीम सोल ले जाता है क्या? सुप्रीम सोल के लिए कहते हैं कि भेजने वाला है; लेकिन खुद तो नहीं जाता है। तो किसको कहते हैं कि पावन दुनिया में ले चलो? (किसी ने कुछ कहा–...) तुम जानते तो हो कि हमको सतयुग में बहुत सुख थे। बच्चे जो सुखधाम में थे, वे ही अब दुःखधाम में आ गए हैं। उनको ही समझाया जाता है। तुम आगे नहीं जानते थे। अभी जानते हो, बरोबर हम पुनर्जन्म लेते आए हैं। पुनर्जन्म लेते–2 हम सुखधाम से दुःखधाम में आ गए हैं। यह पहले पता नहीं था कि हम पहले सुखधाम में थे, फिर बाद में दुःखधाम में आए। अभी सम्मुख बाप समझाय रहे हैं। देखते हो, बाप हम बच्चों को धैर्य दे रहे हैं। अभी 21 जन्मों के लिए तुम सुख पाते हो। किन बच्चों को धैर्य दे रहे हैं? उन बच्चों को धैर्य दे रहे हैं, जो बाप के सम्मुख आकर 21 जन्मों के लिए धैर्य पाते हैं।

तुमने ही 84 जन्म भोगे। क्या? जिन्होंने 21 जन्म सुख पाया, उन्होंने ही 84 जन्म भोगे हैं और बाकी ने? (किसी ने कहा–कम जन्म) बाकी ने कम जन्म भोगे हैं, 21 जन्मों का पूरा सुख बाप के सम्मुख आकर डायरैक्ट प्राप्त नहीं किया, कोई–न–कोई दूसरे देहधारियों के चक्कर में फँस गए, दूसरे–2 देहधारी गुरुओं के चक्कर में फँस गए; क्योंकि पूर्वजन्मों के संस्कार हैं, तो कम जन्म लेने वाली आत्माओं का संग–साथ निभाने लग पड़े। तो बोला– तुमने ही 84 जन्म भोगे हैं। जो सेकण्ड बर्थ, थर्ड बर्थ में सेकण्ड–थर्ड नारायण होगा और उसकी प्रजा होगी, एक्युरेट प्रजा, वो 84 जन्म भोगने वाली नहीं होगी, उनकी कलाएँ भी कुछ–न–कुछ कम होंगी और जन्म भी कुछ–न–कुछ कम हो जाएँगे। क्यों? क्योंकि वो कच्ची कन्वर्ट होने वाली आत्माएँ हैं और जो कन्वर्ट होते हैं, वो एक बाप पर पक्की श्रद्धा, विश्वास और निश्चय रख करके नहीं चल पाते, तो टूट पड़ते। फिर दूसरे धर्म में चले जाते, सतयुग में तो नहीं जाते। कहाँ जाते? वो आत्माएँ द्वापरयुग से फिर दूसरे–2 धर्मों में कन्वर्ट हो जाती हैं।

तो ज़रूर समझना चाहिए– सतयुग में सुखधाम होगा। दुःखधाम में दुःख है। सुख और दुःख का यह खेल बना हुआ है और ये है संगम(युग), यहाँ सुख भी होगा तो दुःख भी होगा। आधा कल्प सुख और आधा कल्प दुःख। यह भारत का ही खेल है। भारत ही सतोप्रधान

हीरे जैसा था। अब कौड़ी मिसल बन गया है। भारतवासियों की ही बात है। बाप ने समझाया है– तुम पवित्र हीरे जैसे थे। फिर रावण ने तुमको कौड़ी मिसल बनाया है। बाप ने आ करके हीरे जैसा बनाया– हीरो जीवन, हीरो पार्टधारी। हीरे में क्या विशेषता होती है? चमक मारता रहता है। मिट्टी में भी पड़ा हुआ हीरा होगा, तो भी चमक मारेगा। तो तुम्हारा हीरे जैसा जीवन बाप ने बनाया और रावण ने कौड़ी जैसा बना दिया। अभी तुम भारतवासी कैसे कंगाल बन पड़े हो। अभी तुम जो ब्राह्मण बने हो, वही सूर्यवंशी थे, सुखधाम के मालिक थे। अभी फिर से तुम पुरुषार्थ कर रहे हो स्वर्ग का मालिक बनने के लिए।

जानते हो बाबा स्वर्ग स्थापन करने अर्थात् पतितों को पावन बनाने आए हैं। बाबा के आने का मक्सद क्या है? पतितों को पावन बनाना मक्सद है, एम–ऑब्जेक्ट है। सिर्फ़ ज्ञान सुनाकर चले जाने का एम–ऑब्जेक्ट नहीं है कि ज्ञान सुनाकर बीच में चले जाएँगे, फिर हम पतित से पावन अपने–आप बनते रहेंगे। नहीं। मनुष्य तो बुलाते ही रहते हैं। तुम बच्चे यहाँ पावन बन रहे हो। क्या? वो अभी भी आवाहन कर रहे हैं। किसका? कि हे पतित–पावन बाप, आओ! आते तो हैं नहीं बीच में, सिर्फ़ साक्षात्कार मात्र होता है। भक्तिमार्ग में कहीं आता है क्या? तो वो बुलाते हैं और तुम यहाँ बाप के संग के रंग से पावन बन रहे हो। जानते हो पावन कैसे बनना होता है और पतित कैसे बनना होता है। कैसे पावन बनते हैं? कैसे पतित बनते हैं? संग के रंग से पतित बने। किसके संग के रंग से? अनेक धर्मपिताओं के संग के रंग से भारतवासी नीचे गिरे और एक के संग के रंग से तुम बच्चे ऊपर चढ़ते हो। पतित दुनिया को पावन कैसे बनाते हैं– यह कहाँ भी शास्त्रों में लिखा हुआ नहीं है। पतित बने हैं, तब तो बुलाते हैं कि पतित को आ करके पावन बनाओ। आ करके पावन बनाओ, तो ज़रूर आना पड़े। बाप समझाते हैं कि 5000 वर्ष पहले भी आ करके पतित से पावन बनाया था। आना ज़रूरी है पतितों को पावन बनाने के लिए।

तुम आत्माएँ सतोप्रधान पवित्र थीं तो तुम्हारा शरीर भी सतोप्रधान था। अब आत्मा भी तमोप्रधान है तो शरीर भी तमोप्रधान है। सतयुग में दोनों नए मिलेंगे। पावन कैसे बनो, उसके लिए बाप समझाते हैं– हे आत्माओं! क्या करो? मामेकम् याद करो, मुझ एक को याद करो। और कोई को ऐसे कहते नहीं हैं सिवाय तुम बच्चों के। और कोई ऐसे समझा भी नहीं सकता। हे आत्माएँ, हे मेरे मीठे बच्चों– यह परमात्मा ही कह सकते हैं। तुम अब सतोप्रधान से तमोप्रधान बन गए हो। अब फिर तुमको यहाँ ही सतोप्रधान बनना है; या सतयुग में बनना है? कहाँ बनना है? यहाँ ही इसी जन्म में इसी शरीर से सतोप्रधान बनना है। यह है श्रेष्ठ मत। ये मत संन्यासी तो दे नहीं सकते; क्योंकि उन्हों का है हठयोग। वे कभी भी राजयोग सिखलाय नहीं सकते। वो हैं निवृत्तिमार्ग वाले। क्या? जो निवृत्तिमार्ग वाले हैं, वो कभी राजयोग नहीं सिखलाय सकते। कौन सिखलाय सकते हैं? प्रवृत्तिमार्ग वाले ही प्रवृत्तिमार्ग वालों को राजयोग सिखलाय सकते हैं। कौन हैं निवृत्तिमार्ग वाले? संन्यासी। दुनियावी या ब्राह्मणों की दुनिया में भी हैं? (किसी ने कहा–ब्राह्मणों की दुनिया में) ब्राह्मणों की दुनिया में कैसे हैं? ब्राह्मणों की दुनिया में निवृत्तिमार्ग वाले संन्यासी कैसे हुए? उन्होंने बाप के साथ प्रवृत्ति नहीं बनाई है क्या? बाप के साथ प्रवृत्ति

नहीं बनी है क्या? (किसी ने कहा– निराकार बाप के...) निराकार के साथ प्रवृत्ति! लेकिन निराकार ज्योतिबिन्दु के साथ तो सिर्फ़ बाप और बच्चे का सम्बंध होता है– आत्मा–2 बच्चे और बाप। वो हमारा सिर्फ़ बाप है, दूसरा कोई सम्बंध नहीं जुड़ता। हम आत्मा–2 आपस में भाई–2; भाई–बहन भी नहीं। दूसरे सम्बंध कब जुड़ते हैं? जब वो साकार में प्रवेश करता है, तब प्रवृत्ति बनती है। प्रवृत्ति माना साजन–सजनी का सम्बंध। प्रवृत्ति में मात–पिता होते हैं साकार में। 'मात–पिता' शब्द जब कहा जाता है, तो ज़रूर एक स्त्रीलिंग और दूसरा, पुल्लिंग होना चाहिए। कहते हैं– त्वमेव माता च पिता त्वमेव; तू ही मेरी माता है, तू ही मेरा पिता है। तो इसका मतलब ये नहीं कि बिंदु माता है और बिंदु पिता है। बिंदु क्या स्त्री बनता है? बिंदु–2 आत्माएँ तो सब पुल्लिंग। हाँ, वही बिंदु जब स्त्री चोले में प्रवेश करता है, रुद्रमाला का लास्ट मणका और रुद्रमाला का पहला मणका पुरुष, लास्ट और फर्स्ट दोनों ही नज़दीक हैं, दोनों में ही परमात्मा बाप की विशेष प्रवेशता होती है। रुद्रमाला के सभी मणकों में बाप की प्रवेशता होती है। रुद्रमाला है ही शिव की माला। तो उन बच्चों में, विशेष बच्चों में प्रवेश करने पर वो माता और पिता बनता है; इसलिए कहा– तू ही माता और तू ही पिता। तो ये प्रवृत्ति है। चलो, माँ–बाप का बच्चा है, बच्चा बन करके चल रहा है, अंडर दी कंट्रोल माँ–बाप के, तो उसको निवृत्त कहेंगे क्या? वो भी तो प्रवृत्ति में हुआ ना! प्रवृत्ति में भाई–बहन भी होते हैं, प्रैक्टिकल में माँ–बाप भी होते हैं, सखा–सम्बंधी भी होते हैं। संन्यासियों के लिए ऐसे नहीं कहेंगे। संन्यासी माँ–बाप को नहीं मानते। उनके यहाँ क्या चलता है? फॉलोअर्स। संन्यासियों के क्या होंगे? फॉलो करने वाले। वो गुरु बन करके बैठेंगे। बाकी संन्यासियों को कोई चेला ऐसे नहीं कहे कि तुम्हीं हमारे माता हो, तुम्हीं हमारे पिता हो।

तो बाप दोनों को सुख देते हैं। वे तो सिर्फ़ एक को ही पवित्र बनाते हैं। कौन? संन्यासी। बाप को तो सारे विश्व को पवित्र बनाना है। ज़रूर बनाकर ही छोड़ेंगे, तब तक छोड़ेंगे नहीं। कि छोड़ करके सूक्ष्मवतन में चले जाएँ या मूलवतन में चले जाएँ! ऐसे नहीं। बाप आए हैं, तो बच्चों को साथ ले करके जाएँगे। साथ रहेंगे, साथ खाएँगे–पिएँगे और साथ ले करके जाएँगे। सर्व का सद्गति दाता राम कहा जाता है। तो ज़रूर सर्व को सद्गति मिलेगी।

यह पुरानी दुनिया अब बदल रही है। कलियुग को मृत्युलोक और सतयुग को अमरलोक कहा जाता है। कहा जाता है कहाँ? ये कहावत कहाँ की है– अमरलोक? शास्त्रों की कहावत है ना! शास्त्रों में जो भी बातें हैं, वो कहाँ की यादगार हैं? ज़रूर संगमयुग की यादगार है। ज़रूर संगमयुग में ऐसे बच्चे बने हैं, जो अमरनाथ के अमर बच्चे बने हैं। अमरनाथ अमर है, निश्चय बुद्धि अटल है, तो उसके बच्चे भी अटल निश्चय बुद्धि होंगे। ऐसी भी स्टेज आएगी बच्चों की जो अमरलोक में अपने को अमर अनुभव करेंगे। माया की हिम्मत नहीं, जो उन बच्चों को मार सके। उसको कहेंगे– 'संगमयुगी स्वर्ग'। संगमयुगी स्वर्ग कहें या अमरलोक कहें। अमरकथा भी गाई हुई है। कथा, कहानियाँ, त्योहार– ये सब कहाँ के गाए हुए हैं? इसी संगमयुग की यादगार है। कौन–से संगमयुग की यादगार? सम्पन्न स्टेज वाले संगमयुग की यादगार, सम्पूर्ण अवस्था की यादगार। बाप तुम बच्चों को समझाते हैं कि तुम अभी सच्ची अमरकथा सुन रहे हो, अमर

बनने की कथा। कैसे बनोगे? अमर माना दुनिया में कोई है नहीं, जो तुमको मार सके। अकालमूर्त बाप के बच्चे भी कैसे होंगे? मास्टर अकालमूर्त बच्चे होंगे। जो कालों का काल है, उसके बच्चे हैं। उनको कोई काल खा नहीं सकता। तो अब बच्चे मुझे याद करो तो तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे और तुम स्वर्ग/अमरपुरी के लायक बन जाएँगे।

आत्मा पतित है तो पावन दुनिया वा मुक्तिधाम में चल नहीं सकती। क्या? जितनी प्योरिटी की पावर आती जाएगी उतना–2 हम अपनी मन–बुद्धि से पवित्र वायब्रेशन अपना बना सकेंगे और अनुभव कर सकेंगे संगमयुग में कि हम पवित्र दुनिया में हैं। अगर पवित्र नहीं रहेंगे, दृष्टि से, वृत्ति से, कृति से 'मेरा तो एक शिवबाबा, दूसरा न कोई'– अगर ऐसी स्थिति नहीं बनाएँगे, तो सुख का अनुभव नहीं कर सकते। आत्मा पतित है, तो पावन दुनिया का अनुभव नहीं कर सकती, मुक्तिधाम में चल नहीं सकती। तुम खुद भी जानते हो, यह पतित दुनिया है। पतित दुनिया में कोई पावन नहीं होते हैं। क्या? इस पतित दुनिया में एक भी पावन नहीं और पावन दुनिया में एक भी पतित नहीं होता। हाँ, नंबरवार हो सकते हैं। पतित दुनिया में नंबरवार पतित हो सकते हैं और पावन दुनिया में नंबरवार नहीं कहेंगे। क्या कहेंगे? सब पावन होते हैं।

बाप घड़ी–2 बच्चों को कहते हैं– मुझे याद करो तो पावन बन जावेंगे। कहते हैं, कहने वाला ज़रूर शरीरधारी होगा, तब तो कहेगा कि मुझे याद करो तो पावन बन जाएँगे। किसे याद करो? जैसे को याद करेंगे वैसे बनेंगे– ये नियम है। चोर–डकैतों को याद करेंगे तो चोरी–डकैती के संस्कार, गुण स्वतः ही आ जाएँगे; श्रेष्ठ को याद करेंगे तो श्रेष्ठ बनेंगे। तो मुझे याद करो का मतलब क्या हुआ? ज़रूर कोई ऐसा स्वरूप है, जो निर्लेप हो करके पार्ट बजाता है। वो संन्यासी तो कहते हैं– हमारी आत्मा निर्लेप है, हमको पाप–पुण्य का लेप–छेप नहीं लगता। बाप कहते हैं– आत्माएँ कभी निर्लेप नहीं हो सकतीं। चाहे वो प्रजापिता की ही आत्मा क्यों न हो अथवा 500 करोड़ मनुष्य में से कोई भी आत्मा क्यों न हो; राम–कृष्ण की आत्माओं को भी लेप–छेप लगता है, पाप–पुण्य का लेप–छेप ज़रूर लगेगा, श्रेष्ठ और निष्कृष्ट के संग का रंग कुछ–न–कुछ ज़रूर लगेगा। किसको नहीं लगता? एक सुप्रीम सोल बाप ही ऐसा है, जो तन में प्रवेश करके इस तरह पार्ट बजाता है कि उसको किसी के संग का रंग लग नहीं सकता, वो किसी से प्रभावित नहीं हो सकता, वो किसी की प्रजा नहीं बनता, किसी का बच्चा नहीं बनता, रचना नहीं बनता। तो बताया– मुझे याद करो। तो 'मुझे' कहने वाला ज़रूर ऐसी स्टेज में होना चाहिए, जिस पर पाप कर्मों का कोई भी लेप–छेप न लगे; इसलिए मुरली में बोला है– ''मैं ऐसे से विनाश कराता हूँ जिस पर कोई पाप न लगे।'' (मु०29.4.70 पृ०1 मध्य) वो तो भक्तिमार्ग की संस्कृत की गीता में भी ये बात लिखी हुई है। आटे में लून मिसल वो बातें हैं शास्त्रों में भी। क्या? कि योगनिष्ठा में स्थिर जो भी व्यक्ति होगा, वो सारे संसार की भी हत्या कर दे, तो भी उस पर कोई पाप नहीं लगता। (गीता 18/17) तो याद करना ऐसी मुख्य बात है। किसको याद करना? (किसी ने कुछ कहा–...)

अक्षर वही है 'मन्मनाभव'। इन अक्षरों का भी कोई अर्थ होता है। ये अक्षर कोई बाप ने नहीं बोला है– 'मन्मनाभव'। ये तो शास्त्र का अक्षर है। बाप तो हिंदी में बोलते हैं, संस्कृत में

तो नहीं बोलते। संस्कृत में तो ढेर संधियाँ करनी पड़ती हैं। तो बाप उसका अर्थ बताते हैं। मत्, मना, भव– ये तीन अक्षर हैं, तीन शब्द हैं। मत् माना मेरे, मना माना मन में, भव माना समा जा अर्थात् मेरे मन के संकल्पों में अपने मन के संकल्पों को समा दे, जो बाप का संकल्प सो बच्चे का संकल्प यानी कि संकल्प मात्र भी बच्चे के अंदर विरोधाभास नहीं होना चाहिए। वाचा में विरोध होना, कर्मेंद्रियों से विरोध करना– ये तो बहुत बड़ी बात, इसका तो बहुत पाप बनेगा। तो बताया– यह है भगवानुवाच, न कि श्रीकृष्ण भगवानुवाच। ये है शिव भगवानुवाच। उवाच, जब 'उवाच' शब्द कहेंगे, तो शिव बिंदु होगा क्या? उवाच माना? बोला, बोलने वाला, कहने वाला। तो जब शिव भगवान उवाच करेगा, तो बिंदु उवाच करेगा क्या? बिंदु उवाच नहीं करता। बिंदु नहीं कहेगा– मन्मनाभव, मेरे मन में समा जा, मेरे अंदर समा जा। ब्रह्मा भी नहीं कह सकता। अगर ब्रह्मा को याद करने वाले होंगे, तो ब्रह्मा की जो गति हुई होगी, वो याद करने वालों की गति होगी। ब्रह्मा का हार्टफेल हुआ होगा, तो उनका भी हार्टफेल होगा। ब्रह्मा को शरीर छोड़ना पड़ा, तो उनको याद करने वालों को भी शरीर ज़रूर छोड़ना पड़ेगा; लेकिन बाप ने क्या बताया? बच्चे, मैं तुमको यहीं नर से नारायण बनाने के लिए आया हूँ, पतित से पावन बनाने के लिए आया हूँ। कोई अगले जन्म में तुमको पतित से पावन नहीं बनना है। तो बाप कहते हैं– मन्मनाभव। ये कोई कृष्ण भगवानुवाच नहीं है, यह कोई मनुष्य, मनुष्य को नहीं कह सकता– मन्मनाभव, मेरे मन के संकल्पों में समा जा।

शिवबाबा कहते हैं– मैं तो सभी आत्माओं को साथ ले जाऊँगा। कोई भी आत्मा ऐसी इस सृष्टि पर नहीं बचेगी, जो मेरे साथ न जाए। साथ जाना माना? मेरे संकल्पों में समाहित हो करके जाना पड़े, छोडूँगा किसी को नहीं। कोई कहे कि नहीं, हम तो विरोधी बनके रहेंगे, मेरी बात सत्य और बाप की बात झूठ। बाप कहते– नहीं, मेरे साथ ही चलना पड़े, मैं किसी को छोड़ने वाला नहीं हूँ। सबको जाना है। जबकि पावन दुनिया स्थापन होती है। वहाँ तो सिर्फ़ देवी–देवताएँ ही रहेंगे। नाम ही है– सत् युग। कैसा युग? सत् का युग। स्थापन भी कौन करता है? सत् बाप स्थापन करता है। ट्रूथ गॉडफादर कहा जाता है, सत्यनारायण की कथा गाई हुई है। तो सत्य बाप कौन–से बच्चों को पसंद करता है? सच्चे बच्चों को पसंद करता है। भल ठीक है– दुनिया झूठी है, संग के रंग से जो बाप के बच्चे हैं, वो भी झूठे बन गए; लेकिन बाप उनको क्या बनाके छोड़ेगा? सत् बनाके छोड़ेगा। तो सतयुग में इतने मनुष्य नहीं होते। वहाँ तो एक ही धर्म होता है। उनको कहा ही जाता है– अद्वैत देवी–देवता धर्म। कैसा धर्म? अद्वैत, जहाँ दूसरी मत हो ही नहीं सकती, एक राजा और एक उसकी मत। अगर कहीं दो मतें हैं, दो भाषाएँ हैं, दो राज्य हैं, दो धर्म हैं, तो वो बाप का स्थापन किया हुआ करिश्मा नहीं है। माया की प्रवेशता होने से फिर द्वैत धर्म स्थापन हो जाता है। शूटिंग कहाँ होती है? संगमयुग में ब्राह्मणों की दुनिया के अंदर ही ये शूटिंग होती है। जिनमें–2 माया की प्रवेशता होती है, माया रूपी रावण। रावण माने अनेक मतों वाले सिर। अनेक सिरों में अनेक मतें होती हैं। तो अनेकों की मत पर चलने लग पड़ते हैं। वो अनेकों की मत पर चलना– यही माया रूपी रावण के राज्य में आ जाना हुआ।

बाप कहते हैं– सिर्फ़ मेरी मत पर चलो। बाप अपने राज्य के लिए एक ही धर्म स्थापन करते हैं, एक की धारणा, दूसरी धारणाएँ नहीं। फिर चंद्रवंशी में आना है। पुनर्जन्म तो लेना ही पड़े। सूर्यवंशी राजा–रानी और प्रजा। प्रजा भी 8 जन्मों के बाद आकर चंद्रवंशी में आती है। ऐसा तो सतयुग में कोई नहीं है, जो सूर्यवंशी में ही हमेशा बना रहे, चंद्रवंश में आए ही नहीं। तो शूटिंग कहाँ होती है? सूर्यवंश से चंद्रवंश में जाने की भी शूटिंग कहाँ होती है? इसी संगमयुग पर। यानी ऐसा कोई आत्मा नहीं कह सकती कि मैं चंद्रवंशी कभी नहीं बनूँगी। जो भी सतयुग में जन्म लेगा, वो त्रेता में जाके चंद्रवंशी ज़रूर बनेगा और उसकी शूटिंग भी यहाँ होती है। माया किसी को छोड़ती नहीं है। तो ये अहंकार कोई न करे कि मैं तो सदा माया से सेफ रहता हूँ। नहीं, माया सबको वायलोरे में डालती है। हाँ, चंद्रवंशी में जाते हैं, तो वृद्धि हो जाती है; परंतु फिर राज्य होना है। चंद्रवंशी में आते हैं। बाकी जो नहीं पढ़ते हैं, वो पिछाड़ी में आते हैं। वो जैसे चंद्रवंशी धर्म में आते हैं। तो सेक्शन ही अलग हो जाता है। जब पतित बन जाएँगे तब तो अपन को देवी–देवता कहेंगे नहीं। नाम ही बदल जाता है– मिसेज फलानी, फलाने की औरत। सतयुग में यह अक्षर नहीं होते हैं। वहाँ तो नाम ही है 'देवी–देवताएँ'। अब नाम तो बहुत अच्छे–2 रखते हैं; परंतु यहाँ तो देवता ही नहीं हैं। यहाँ तो हैं सब असुर। तो नाम ही ऐसे हो गए हैं।

बाबा प्वॉइंट्स तो युक्ति से बहुत बतलाते हैं कि कोई भी आवे तो कैसे समझावें। आने से ही बोलो– यहाँ ब्रह्माकुमार–कुमारी हैं। तो यह फैमिली है। फैमिली का मुखिया कौन होता है? ज़रूर फैमिली का मुखिया प्रजापिता ब्रह्मा होगा। ब्रह्मा है शिवबाबा का बच्चा। तुम बच्चे जानते हो। विष्णु और शंकर भल रचना हैं; परंतु ब्रह्मा द्वारा ही रचना होती है। शंकर कुमार और शंकर कुमारी नहीं गाए जाते। क्या कहा जाता है? ब्रह्माकुमार और ब्रह्माकुमारी। ये शंकर कुमार और शंकर कुमारी ऐसा होता नहीं है और न विष्णुकुमार–विष्णुकुमारी कहा जाता। ब्रह्मा द्वारा ही रचना होती है; इसलिए अव्यक्त वाणी में बोला– ''ब्रह्मा का पार्ट स्थापना के कार्य में अंत तक नूँधा हुआ है।'' (अ०वा०30.6.74 पृ०83 मध्य) तो पार्ट कहाँ, सूक्ष्मवतन में चलता है, ऊपर? पार्ट कहाँ चलता है? ज़रूर साकार सृष्टि पर चलता है। ज़रूर ब्रह्मा की सोल कोई ब्राह्मण बच्चों में प्रवेश करके पार्ट बजाती है। तो जिसमें पालना का मुख्य पार्ट बजाती है ब्रह्मा के रूप में, तो वही ब्रह्मा का नाम–रूप कहा जाता है। तो ब्रह्मा नाम अनेकों के हो जाते हैं।

ब्रह्मा–सरस्वती की आत्माएँ जा करके फिर ल.ना. बनती हैं। प्रवृत्तिमार्ग दिखाने के लिए विष्णु को चार भुजाएँ दिखाते हैं। चार भुजा माना? चार मददगार बनते हैं ईश्वर के कार्य में। कौन–2 से चार मददगार बनते हैं? ब्रह्मा के साथ सरस्वती और शंकर के साथ पार्वती। तो वह भी प्रवृत्तिमार्ग को सिद्ध करते हैं। कौन? विष्णु।

यह तो समझाना चाहिए– प्रजापिता ब्रह्मा है। इतने ढेर बच्चे बेहद के बाप के सिवाय और कोई को हो नहीं सकते। इस बात से ही निश्चय पैदा हो जाना चाहिए। क्या? कि इतने ढेर बच्चे सिवाय प्रजापिता ब्रह्मा के और किसी को नहीं हो सकते। कितने ढेर बच्चे होते हैं? 500 करोड़ ढेर मनुष्य हो जाएँगे, जो उसको अपना बाप स्वीकार करेंगे; इसलिए वाणी में बोला .....। अब मिलना–2 अलग तरह का होता है। कोई क्लोज कॉण्टेक्ट में आ करके मिलते

हैं, कोई दूर–2 के सम्पर्क से ही मिलते हैं, सिर्फ़ दृष्टि मात्र से देखेंगे और उनको निश्चय बैठ जाएगा, कोई ट्रांज़िस्टर से कान से आवाज़ ही सुनेंगे और उनको निश्चय बैठ जाएगा। तो इतने ढेर बच्चे बाप के सिवाय और कोई को हो नहीं सकते।

शिवबाबा अपने बच्चे एडॉप्ट करते हैं ब्रह्मा द्वारा। उन्हों को ब्राह्मण कहा जाता है, जिन बच्चों को एडॉप्ट करते हैं। बाप आ करके मनुष्य से देवता बनाते हैं। यहाँ तुम आए हो बाप के पास। इस समय तुमको तीन बाप हैं। क्या? कौन–2 से तीन बाप? लौकिक, पारलौकिक और अलौकिक। लौकिक बाप कौन? लौकिक बाप उसे कहा जाता है जो शारीरिक जन्म देता है और लौकिक बाप उसको भी कहा जाता है– जो शारीरिक जन्म भल न दे; लेकिन गोद में ले ले। तो जो गोद का एडॉप्ट किया हुआ बच्चा होता है उसको भी क्या कहा जाता है? उसको भी लौकिक बाप (का बच्चा) कहा जाता है। तो लौकिक बाप साकार में होता है और फिर दूसरा– अलौकिक, इस लोक से उसका कनेक्शन नहीं है। भल इस दुनिया में शरीर से मौजूद हो; लेकिन इस दुनिया से उसका बुद्धि का कॉण्टेक्ट/कनेक्शन खत्म। देह और देह की संबंध की दुनिया से उसका कनेक्शन कट होता है। किस दुनिया से उसका सम्बंध है? ब्राह्मणों की दुनिया से सम्बंध है। आने वाली नई दुनिया की बातें उसकी बुद्धि में चलेंगी, प्लानिंग चलेगी और ज्ञान के प्वॉइण्ट्स बुद्धि में चलेंगे; बाकी साकारी दुनिया से बुद्धि का कनेक्शन कट रहता है। तो वो हुआ अलौकिक बाप; और फिर पारलौकिक बाप? पारलौकिक बाप है आत्माओं का बाप। कौन? शिव ज्योतिबिंदु। वो भी उसी तन के द्वारा प्रत्यक्ष होता है। तो इनको अलौकिक बाप कहा जाता है। वह लौकिक और वह शिवबाबा है पारलौकिक। क्या कहा? वह लौकिक और वह पारलौकिक। 'वह' क्यों कह दिया? ब्रह्मा के तन में बैठ करके ये मुरली चलाई जा रही है, तो दोनों को अलग–2 क्यों कर दिया? ज़रूर भविष्य पार्ट की तरफ इशारा किया कि भविष्य में भी जो परमात्म–पार्ट चलेगा, उस समय भी लौकिक बाप भी होगा ब्रह्माकुमार–कुमारियों का। जो ब्रह्माकुमार–कुमारी सरेंडर्ड हो चुके हैं ऑलरेडी, उनका लौकिक बाप, उनकी शरीर की परवरिश करने वाला कौन हुआ? किसको कहेंगे? भल शरीर छोड़ दिया, तो भी किसको कहेंगे? ब्रह्मा को कहेंगे ना! लौकिक शरीर की परवरिश तो की ना! भल मनन–चिंतन–मंथन करने वाला व्यक्तित्व तैयार नहीं हुआ; लेकिन शारीरिक परवरिश की; इसलिए उसको भी कहेंगे– लौकिक बाप। उससे भी कोई प्राप्ति नहीं होती; इसलिए मुरली में भी बोला– ''ब्रह्मा या क्राइस्ट की पूजा से मिलेगा कुछ भी नहीं।'' ब्रह्मा वर्सा देने वाला नहीं है। वर्सा देने वाला कौन है? बाप। तो भविष्य पार्ट की तरफ इशारा दिया। वो लौकिक और वो है पारलौकिक। प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा कैसे बच्चे पैदा होते हैं, यह कोई भी शास्त्र में नहीं है। यह तो बाप समझाते हैं, बाप ने इसमें प्रवेश कर फिर इनका नाम 'प्रजापिता ब्रह्मा' रखा है। ये क्या बात हुई? बाप ने इसमें प्रवेश कर, 'इनमें' नहीं कहा। इसमें प्रवेश कर। किसमें? ब्रह्मा में। फिर इनका नाम 'प्रजापिता ब्रह्मा' रखा है। यहाँ 'इनका' शब्द बहुवचन कर दिया। 'इसमें'– ये एकवचन है। तो जिसमें प्रवेश कर नाम रखा, वो कौन हुआ? ब्रह्मा, दादा लेखराज का स्वरूप, वो हुआ इसमें। इसमें प्रवेश कर इनका नाम प्रजापिता ब्रह्मा रखा। किनका नाम? इनका माने कौन? वही आदि वाले व्यक्तित्व, जिनकी तरफ

इशारा दिया, जिनका टाइटिल ब्रह्मा को मिला। दादा लेखराज को भी टाइटिल मिला। किसका मिला? वही आदि में जो प्रजापिता ब्रह्मा थे, उनका टाइटिल उनको मिलता है। वही टाइटिलधारी प्रजापिता ब्रह्मा फिर उन बच्चों में प्रवेश करते हैं, प्रवेश करके फिर पार्ट बजाते हैं। तो बताया– इनका नाम प्रजापिता ब्रह्मा रखा। यानी दो हो गए, एक प्रजापिता और दूसरा– ब्रह्मा। जिसको आदिदेव कहा जाता है। क्या कहा जाता है? आदिदेव। देव कहाँ होते हैं? अभी तो कहा– इस पतित दुनिया में कोई देवता, पावन हो नहीं सकता। तो आदिदेव कब की यादगार हुई? 1969 की यादगार हुई या भविष्य में आने वाले समय की यादगार हुई? कौन–से समय की यादगार हुई? आदिदेव और आदिदेवी किस समय से गाए जाएँगे? अभी पतित दुनिया है या पावन दुनिया है? अभी पतित दुनिया है। तो पतित दुनिया में आदिदेव–आदिदेवी नहीं हो सकते। ज़रूर वो आने वाला समय है, जिसमें आदिदेव और आदिदेवी प्रत्यक्ष होंगे। अच्छा, बाप से तुम बच्चों को क्या मिलता है? समझाया जाता है– यहाँ बाप का वर्सा नहीं मिलता। माना? यहाँ बाप का वर्सा नहीं मिलता। किसका वर्सा मिलता है? डाडे का वर्सा मिलता है। तो डाडे कौन हुआ? बाप हुआ ब्रह्मा, तो डाडे हुआ ब्रह्मा को भी रचने वाला। जैसे पीछे अभी वाणी में कहा कि ब्रह्मा का भी बाप कौन? शिवबाबा। तो ज़रूर ब्रह्मा को भी रचने वाला कोई यज्ञ के आदि में हुआ। रचयिता हमेशा रचना से ज़्यादा पावरफुल होता है; इसलिए मुरली में बोला– ''ऐसे–2 बच्चे थे, जो मम्मा–बाबा को भी ड्रिल कराते थे, टीचर बन करके बैठते थे, हम उनके डायरेक्शन पर चलते थे।'' (मु.ता.28.5.74 पृ.2 अन्त) तो ज़रूर यज्ञ के आदि में वो आत्माएँ ब्रह्मा–सरस्वती से भी ज़्यादा पावरफुल थीं। जो आदि में सो अंत में भी प्रत्यक्ष होतीं। तो समझाना चाहिए कि यहाँ बाप का वर्सा नहीं मिलता है, यहाँ डाडे का वर्सा मिलता है। वह है निराकार। निराकार का मतलब? (किसी ने कुछ कहा–...) वर्सा साकार में लेना है या निराकार में लेना है? इसलिए मुरली में पूछा– ''निराकार से क्या निराकारी वर्सा चाहिए?'' (किसी ने कहा–नहीं) निराकार ज्योतिबिंदु शिव परमात्मा, उसका निराकारी वर्सा है– ज्ञान। तो सिर्फ़ ज्ञान ही वर्सा चाहिए क्या? प्रकांड पंडित, विद्वान हो जाएँ और प्रैक्टिकल में जो प्राप्ति करनी है, वो न प्राप्त कर सकें, तो फायदा क्या हुआ! तो निराकारी वर्सा नहीं चाहिए; हमको साकारी दुनिया का साकारी वर्सा 'विश्व की बादशाही' चाहिए। तो डाडे का वर्सा मिलता है। वो निराकार है माना निराकारी स्टेज वाला है। जैसे धर्मपिताएँ होते हैं, क्राइस्ट हैं, महात्मा बुद्ध हैं, गुरुनानक हैं, उनका चेहरा ध्यान से देखो। कैसा दिखाई पड़ता है? वो अपने धर्म की निराकारी बीज–रूप स्टेज में टिकी हुई आत्माएँ हैं; इसलिए निराकारी स्टेज वाली हैं; लेकिन वो तो हैं अपने–2 धर्म के बाप। उन बापों का भी कोई बाप इस सृष्टि पर प्रत्यक्ष होता है, तो उसकी तरफ इशारा किया। बापों का भी बाप माना ग्रैण्डफादर, डाडे। कहते हैं ना– बाप–दादे। पतित–पावन, ज्ञान का सागर। ब्रह्मा को पतित–पावन, ज्ञान का सागर नहीं कहा जाता। क्या कहा? अगर ब्रह्मा को पतित–पावन कहा जाए, तो फिर पूछने में आएगा कि कोई पतित से पावन बना? 1969 में कोई छाती ठोक करके ये कहेगा, क्या? कि हम पतित से पावन देवता बन चुके? कोई नहीं कह सकता। तो जब कोई कह ही नहीं सकता, तो ब्रह्मा को पतित–पावन नहीं कहा जा सकता, ज्ञान का सागर भी नहीं कहा

जा सकता। ज्ञान का सागर उसको कहा जाए, जिसको ज्ञान देने वाला कोई न हो। जो सबको ज्ञान दे; लेकिन दुनिया में ऐसा कोई पैदा नहीं, जो उसको समझाय सके। वो बापों का बाप है, टीचर्स का टीचर है और गुरुओं का भी गुरु है। उसका कोई गुरु नहीं हो सकता। तो ये सब खूबियाँ व गुण शिवबाबा के हैं। वह बैठ मनुष्य से देवता वा आसुरी गुणों से बदल दैवी गुणों वाला बनाते हैं। खड़े होकर नहीं बनाते। कैसे? बैठ। ये बिंदु के लिए आया है क्या? बिंदु बैठेगा, खड़ा होगा, सोएगा, चलेगा? बिंदु की तो बात नहीं। ज़रूर बिंदु निराकारी स्टेज में रहता है, किसी शरीर के द्वारा ही निराकारी स्टेज वाला हो करके प्रत्यक्ष होता है। तो वही देवता बनाता है, आसुरी गुणों से बदल दैवी गुणों वाला बनाता है।

मनुष्यों को कब फरिश्ता नहीं कहा जाता। मनुष्य होते हैं, मनन–चिंतन करने वाले तो हो सकते हैं; लेकिन मनुष्य होते हैं इस सृष्टि पर। उनकी मन–बुद्धि ज़रूर कुछ–न–कुछ परसेंटेज में इस दुनिया में रहेगी और फरिश्ता, जिसका इस दुनिया से कोई रिश्ता न रहे। बाप समझाते हैं– तुम पहले फरिश्ता बनते हो, फिर मूलवतन में जाते हो। क्या मतलब? फरिश्ता बनने का मतलब सारे ही ब्राह्मण फरिश्ता ऐसे बन जाएँगे, जो ऊपर चले जाएँगे सूक्ष्मवतन में? मुरलियों में तो सूक्ष्मवतन को कहीं–2 उड़ा भी दिया है। ''सूक्ष्मवतन में क्या है? कुछ भी नहीं।'' ''सूक्ष्मवतन होता ही नहीं।'' तो ऐसे क्यों कहा? कहीं सूक्ष्मवतन की बातें बताते हैं, कहीं कहते हैं– सूक्ष्मवतन है ही नहीं। इसका मतलब है, है तो; लेकिन जिस तरह हम समझते हैं, वैसा नहीं है। सूक्ष्मवतन का मतलब है– सूक्ष्म निराकारी–आकारी स्टेज में रहने वाली आत्माएँ। ऐसी आत्माओं का जहाँ भी संगठन है, वो जैसे कहाँ की रहने वाली हैं? सूक्ष्मवतन में रहने वाली हैं। सूक्ष्मवतन की स्थापना अब होती है। अभी तुम आ–जा सकते हो। कहाँ? सूक्ष्मवतन में। आकारी स्टेज में तुम चाहो तो चाहे जब जाओ, मनन–चिंतन–मंथन की स्टेज में चले जाओ, जैसे सूक्ष्मवतनवासी हो गए। अगर देहभान की स्टेज में हैं, तो कहाँ के वासी हैं? साकार वतन वासी। मनन–चिंतन–मंथन की स्टेज से भी परे, सिर्फ़ बिंदु की स्टेज में चले जाओ– मैं आत्मा बिंदु, मेरा बाप बिंदु, दूसरी कोई बात याद न रहे, निःसंकल्पी स्टेज हो जाए, तो कहाँ के वासी (हुए)? निराकारी दुनिया के वासी। सतयुग में इन मूलवतन, सूक्ष्मवतन, स्थूलवतन की कहानी का पता नहीं पड़ता है।

तुम बच्चों की बुद्धि में अभी है कि हम सतोप्रधान देवी–देवताएँ थे। अभी हम गिर चुके। जब ऊपर में जाएँगे व स्वर्ग में जाएँगे तो यह नहीं समझेंगे कि हमको गिरना है। नहीं। अभी संगम पर तुमको यह ज्ञान है। गिरते और चढ़ते कैसे हैं– यह अभी तुम समझते हो। कैसे गिरते हैं और कैसे चढ़ते हैं? हमें उन राहों पर चलना है जहाँ गिरना और सम्भलना है। तो गिरने का भी अनुभव है और सम्भलने का भी अनुभव; लेकिन क्या अनुभव है? कैसे गिरते हैं और कैसे चढ़ते हैं? जब एक की मत पर चलते हैं, एक का संग करते हैं तो चढ़ते हैं; अनेक का संग करते हैं, अनेकों की मत पर चल पड़ते हैं तो हम गिरते। भल उतरती कला तो सतयुग–त्रेता में भी होती हैं; परंतु वहाँ दुःख नहीं होता है; क्योंकि प्रारब्ध भोग रहे होते हैं। भल कहा जाता है सतयुग–त्रेता में प्रारब्ध है; परंतु डिटेल में जाएँगे तो सीढ़ी थोड़ी–2 उतरनी ही होती है। बाकी

इतना ज़रूर कहेंगे, दुःख तब होता है जब तमोप्रधान दुनिया होती है। द्वापर में भी इतना दुःख नहीं है; क्योंकि वहाँ भी रजोप्रधान स्टेज होती है। सतयुग से त्रेता में आते ही कला कमती होती जाती है। फिर द्वापर से कलियुग में आते हो। रजोप्रधान में इतने पतित नहीं बनते हो। पिछाड़ी में तमोप्रधान बनते हो। क्यों? क्योंकि रजोप्रधान में.... धर्मपिताएँ जो सतोप्रधान स्टेज में आते हैं, उनके संग का रंग शुरू होता है। तो धर्मपिताओं की ही सतोप्रधान स्टेज है, तो उनके संग के रंग में आने वाले जो देवताएँ हैं, वो भी एकदम तीखे रूप से नीचे नहीं गिरेंगे। कब गिरेंगे? जो दूसरे धर्म आते हैं, वो भी जब रजोप्रधान और तमोप्रधान बनने लग पड़ते, तो उनके संग के रंग से भारतवासी और ही तेजी से नीचे गिरते हैं। तब जास्ती दुःख बढ़ता है। पिछाड़ी में तमोप्रधान बनते हो, तो दुःख बहुत हो जाता है। ड्रामा को भी अभी तुम समझ गए हो। हर एक ड्रामा के बंधन में बाँधे हुए हैं।

ड्रामा अनादि शूट किया हुआ है। ऐसे प्रश्न नहीं हो सकता कि ड्रामा कब बना? तो प्रश्न होगा, किसने बनाया? किसने बनाया, कब बनाया– ये प्रश्न नहीं है। ड्रामा तो अनादि है। सृष्टि का चक्र कब शूट हुआ, यह कह नहीं सकते। इनका न आदि है और न अंत है। यह चक्कर चलता ही रहता है।

हम आत्माएँ जो अब देवताएँ बन रहे हैं, अपने 84 जन्मों का पार्ट हमने बजाया है। हमारी आत्मा में अविनाशी नूँध है। क्या? और धर्म वालों की अविनाशी नूँध नहीं कहेंगे। क्यों? क्योंकि उनके तो जन्म ही कम हो जाते हैं। वो ऑलराउण्ड पार्टधारी नहीं हैं। हम 9 लाख सितारे जो आसमान के गाए जाते हैं, वो चैतन्य सितारे ही अविनाशी पार्ट बजाने वाले हैं, ऑलराउण्ड पार्ट बजाने वाले हैं। तो इनको कुदरत कहते हैं। कैसा वंडर है! कोई वर्णन कर नहीं सकता। छोटी–सी आत्मा और कितना चक्कर लगाती रहती है। तुम ऑलराउण्ड पार्ट बजाते हो। किससे कहा 'तुम'? 'तुम' किससे कहा जाएगा? जो सम्मुख बैठने वाले हुए होंगे 9 लाख, उनसे ही 'तुम' कहा जा सकता है; बाकी दूसरों से 'तुम' नहीं कहा जा सकता। तो तुम ऑलराउण्ड पार्ट बजाने वाले हो माने आदि से ले करके अंत तक एक भी जन्म तुम्हारा कम नहीं होता है। और धर्म में जो कन्वर्ट होने वाले ब्राह्मण होंगे, उनका एक/दो/चार/आठ जन्म कम हो सकता है। फिर तुम्हारी थकावट दूर होती है। सतयुग में और कोई ऑलराउण्ड पार्ट नहीं बजाते। क्या कहा? और कोई माना किसकी तरफ इशारा किया? नौ लाख आत्माओं के सिवाय जो दूसरे–2 धर्म के दूसरे–2 नारायण हैं, जिनकी पूजा भारत में नहीं होती है, जो कम कलाओं वाले हैं, जिनके मंदिर और मूर्तियाँ नहीं बनती हैं, उनकी तरफ इशारा किया, उनकी प्रजा की तरफ इशारा किया; क्योंकि वो 84 जन्म लेने वाले नहीं बनते, बाप से डायरैक्ट पढ़ाई पढ़ने वाले नहीं बनते; बाप के ऊपर निश्चय से अनिश्चय पैदा हो जाता है, देहधारी गुरुओं के चक्कर में फँस जाते। तो बताया कि और कोई ऑलराउण्ड पार्ट नहीं बजाते हैं सिवाय तुम्हारे।

आत्मा क्या चीज़ है, यह कोई भी समझते नहीं हैं। क्या कहा? और दूसरे धर्म वालों की बुद्धि में, कम जन्म लेने वालों की बुद्धि में यही बात नहीं बैठती है कि आत्मा क्या चीज़ है। प्रश्न ही करते रहेंगे– बिंदी को कैसे याद करें? अरे! जिसने रसगुल्ला खाया होगा, उसे रसगुल्ला

की याद भी आएगी और जिसने कभी रसगुल्ला खाया ही नहीं, वो रसगुल्ले की याद कैसे करेगा! तो ये आत्मिक स्थिति की बात भी उन्हीं की बुद्धि में जल्दी बैठेगी, जो ऑलराउण्ड पार्ट बजाने वाले परमात्मा बाप के डायरैक्ट बच्चे आत्माएँ हैं; इसलिए मुरली में बाबा हमेशा क्या कहते हैं? रूहानी बाप बैठ रूहानी बच्चों को समझाते हैं। इसका मतलब ये नहीं कि बिंदी बैठके बिंदी को समझाती है। समझाने वाली तो बिंदु आत्मा सुप्रीम सोल ही है; लेकिन साकार शरीर में बैठ करके समझाती है और साकार शरीर में बैठ करके, जो रूहानी स्टेज में टिकने वाले बच्चे हैं, उनको बैठ समझाते हैं; देह–अभिमानी साँड़े तो बैठके सुनेंगे भी नहीं ध्यान से। सुनेंगे भी तो पाँव पसार के बैठ जाएँगे– ये ले! अरे! स्कूल में कहीं टीचर के सामने ऐसे बैठा जाता है! देह–अभिमान में आ करके ये भी ध्यान नहीं रहता कि हम कहाँ आ करके बैठे हैं। तो बाप कहते हैं– मैं देह–अभिमानी साँड़ों को पढ़ाई नहीं पढ़ाता हूँ। पहले आत्मा–अभिमानी बनो, फिर बाप से पढ़ाई पढ़ो; इसलिए बोला था कि ''आत्मा रूपी सूई की सारी कट उतरने पर तुम बच्चे डायरैक्ट बाप से सिखोगे।'' (मु. 16.3.68 पृ.3 मध्यांत) कब सीखेंगे, सतयुग में जाके? और फिर, आत्मा रूपी सूई की जब सारी कट उतर जाएगी, तो हमें सीखने की दरकार रहेगी क्या? लेकिन ये शूटिंग का चक्कर है। आत्मा के परिष्कार करने के लिए, मन–बुद्धि के परिष्कार करने के लिए चार आयामों से गुजरना पड़ता है। सतयुग की शूटिंग होती है, पहला आयाम; फिर त्रेतायुग की शूटिंग होती है, दूसरा आयाम; फिर द्वापर की, फिर कलियुग की। तो चार युगों की शूटिंग में, शास्त्रों में चार बार प्रत्यक्षता रूपी अवतार गाया हुआ है; इसलिए लिखा हुआ है शास्त्रों में कि 'संभवामि युगे–युगे', हर युग के अंत में आते हैं। हर युग के अंत में वो परमात्मा बाप प्रत्यक्ष होता है और जब प्रत्यक्ष होता है तो उस समय जो बच्चा पहली–2 बार बाप के सामने आता है, वो आत्मिक स्टेज वाला होता है। आत्मिक स्टेज का मतलब ही है– आत्मा रूपी सूई की उस पहले आयाम में एक बार कट उतर चुकी है, तब ही वो बाप के सम्मुख हो सकता है; नहीं तो सम्मुख नहीं हो सकता। तो बताया कि तुम बच्चे ऑलराउण्ड पार्ट बजाने वाले हो। उनको तो पता ही नहीं है कि आत्मा क्या चीज़ है? कोई समझते ही नहीं कि आत्मा में 84 जन्मों का पार्ट नूँधा हुआ है। वो कब बंद नहीं होता है, कब मिटने वाला नहीं है। यह बातें कोई भी नहीं जानते हैं, अगर जानते तो बताते भी। सिवाय एक बाप के और कोई समझाय नहीं सकता।

ऊँच–ते–ऊँच है परमपिता परमात्मा, ज्ञान का सागर; और किसको ज्ञान का सागर कहा ही नहीं जा सकता। ऊँच–ते–ऊँच किस आधार पर? किस आधार पर बताया– (किसी ने कुछ कहा–...) ज्ञान का सागर! ज्ञान की दृष्टि से वो ऊँच–ते–ऊँच है; और ज्ञान कब प्रत्यक्ष होता है? ''पता कैसे पड़ता है इनमें बाप भगवान है? जब ज्ञान सुनाते हैं।'' (मु०26.10.68 पृ०2 मध्य) जब तक वो ज्ञान न सुनाए तब तक वो बाप प्रत्यक्ष नहीं हो सकता। तो और किसी को ज्ञान का सागर नहीं कह सकते। वो है ऊँच–ते–ऊँच। ऊँच–ते–ऊँच और नीच–ते–नीच कहाँ की बात है– परमधाम की बात है या सूक्ष्मवतन की बात है? (किसी ने कहा–साकार दुनिया) साकार दुनिया में ऊँच–ते–ऊँच कहा जाता है और साकार दुनिया में नीच–ते–नीच कहा जाता है। परमपिता परमात्मा की ही इतनी महिमा है। महिमा ज़रूर इस साकार सृष्टि की बात है। वही

पतित–पावन, सर्व का सद्गति दाता है, जिसकी इतनी महिमा है। तो ज़रूर महिमावान कार्य कभी किया होगा, प्रैक्टिकल स्वरूप में आ करके किया होगा।

यह तो जो अच्छे–2 महारथी हैं, वो बैठ करके समझाएँ तो कोई समझे कि यह ज्ञान तो बड़ा ऊँचा दिखाई पड़ता है, समझानी तो बड़ी अच्छी है। शास्त्रों के ज्ञान को उतरती कला का ज्ञान कहा जाता है। इससे तो और ही पतित होते रहते हैं। किससे? शास्त्रों के ज्ञान से। परमात्मा जो कुछ सुनाता है, वो शास्त्र नहीं सुनाता है, न शास्त्र पढ़ता है और न शास्त्र पढ़के सुनाता है। क्या? परमात्मा को शास्त्र पढ़ने की दरकार है? नहीं। शास्त्र माना? कागज़ में जो कुछ भी लिख दिया जाए वो क्या हो गया? वो शास्त्र। ये मुरलियाँ भी जो छपी हुई हैं कागज़ में, ये सब क्या हुईं? ये शास्त्र हैं। परमात्मा शास्त्रों का ज्ञान नहीं देता। वो तो मुख से डायरैक्ट सुनाता है, क्लैरिफिकेशन भी देगा तो भी डायरैक्ट मुख से देगा। उसको पढ़ने की दरकार नहीं है। फिर पढ़ने की दरकार किसको होती है? ब्रह्मा की सोल पढ़ सकती है। मनुष्य आत्मा पढ़ती है; लेकिन परमात्मा को पढ़ने की दरकार नहीं है। तो ये जो अच्छे–2 महारथी हैं, वो बैठ समझाएँ कि शास्त्रों से तो पतन होता है; परमात्मा बाप जो समझाते हैं, उससे उत्थान होता है।

यह रावण की दुनिया है। रावण को हर वर्ष जलाते रहते हैं। एक बार जला दें, जलाने के बाद तो राख हो जाती है चीज़, बिल्कुल खत्म हो जाती है, फिर दूसरी बार, दूसरे वर्ष जलाने की कहाँ से ज़रूरत पड़ जाती? (किसी ने कुछ कहा–...) तो ये संगमयुग की बातों की यादगार है। ब्राह्मणों की संगमयुगी दुनिया में कोई ब्राह्मण भी ऐसे होते हैं, जो रावण, कुम्भकर्ण, मेघनाद की तरह होते हैं; लेकिन अपने जीवन में प्रैक्टिकल में धारण नहीं करते। तो ऐसे रावण की तरफ इशारा किया कि उसको वर्ष–2 जलाते हैं। यहाँ ब्राह्मणों की संगमयुगी दुनिया में कोई रावण जलाता है क्या? रावण को जलाना माना जो देह–अभिमानी हैं, उनके जी को जलाना; इसलिए मुरली में बोला– ''हम रावण को क्यों जलाते हैं? क्योंकि रावण हमको जलाते हैं इसलिए हम रावण को जलाते हैं।'' तो क्या रावण को जलाने से काम चल जाएगा? रावण को जलाने से कोई काम नहीं चलेगा। क्यों? वो तो हमारे अंदर रावण है, तो हम दूसरे को जलाएँगे। जिसने ये नहीं समझा है कि हमारे अंदर भी रावण बैठा हुआ है, तो वो दूसरों को जलाता है, दुःख देता है। ..... नहीं खत्म होता। जब तब असलियत को नहीं समझा कि हमारे अंदर जब त्रुटियाँ खत्म हो जाएँ, कमज़ोरियाँ खत्म हो जाएँ, तो हमारे सामने कभी भी विरोध करने वाली आत्माएँ नहीं आएँगी। हम अगर लक्ष्मी–नारायण बन जाएँगे तो हमारे सामने कभी भी कोई विरोध करने वाला आ नहीं सकता। कोई विरोध करने वाला अगर आता है, तो कब तक आता है? जब तक पूर्वजन्मों का हमारे कर्मों का हिसाब–किताब पूरा नहीं हुआ है तब तक कोई–न–कोई विरोधाभास सामने आता रहेगा और हमको उसका मुकाबला करना पड़ेगा। विघ्न सामने आते रहेंगे, हमको उनका मुकाबला करना पड़ेगा। जब हम सम्पन्न स्टेज में आ जाएँगे, तो हम पावन दुनिया में अपने को अनुभव करेंगे, हमको कोई दुःख दे नहीं सकता। तो समझते नहीं हैं कि रावण को वर्ष–2 क्यों जलाते रहते हैं। क्या नहीं समझते? जलाने वाले ही इस बात को नहीं समझते कि

हम रावण को जलाते हैं, तो हमारे अंदर भी रावण बैठा हुआ है। ये नहीं समझते; इसलिए वो रावण भी अगले वर्ष और बड़ा हो करके तैयार हो जाता है। पिछले वर्ष 100 फुट का बनाएँगे, तो अगले वर्ष सवा सौ फुट का बनाएँगे। तो हर वर्ष रावण का रूप बढ़ता जाता है। क्यों बढ़ता जाता है? क्योंकि हमारे अंदर का रावण अगर नष्ट नहीं हुआ, तो बाहर का रावण ज़रूर और ही बढ़ता जाएगा। माया ने कितना पत्थर बुद्धि बनाय दिया है। रावण क्या चीज़ है, क्यों जलाते हैं? यह नहीं समझते। यह तो एक जैसे गुड़ियों का खेल बनाय दिया है। गुड़ियाँ बनाय दी हैं, अर्थ कुछ नहीं जानते। दस शीश वाला मनुष्य तो कोई होता नहीं। जब मनुष्य होता नहीं है, तो चित्र क्यों बनाय दिया? बाबा तो कहते हैं– चरित्र की यादगार चित्र बनाया जाता। तो चरित्र करने वाला कोई हुआ होगा, तब तो चित्र बनाया। क्या चरित्र करने वाला हुआ होगा? अनेक मतें मनुष्यों की संगठित हो करके जो राज्य चलाती हैं, उसको रावण–राज्य कहा जाता है। जिसको कहते हैं– प्रजा के ऊपर प्रजा का राज्य। आज जो प्रजातंत्र राज्य है, वो प्रजातंत्र राज्य क्या ईश्वर ने स्थापन किया? ईश्वर ने तो राजयोग सिखा करके राजाओं का राज्य स्थापन किया; प्रजा का राज्य स्थापन नहीं किया। प्रजा का राज्य का मतलब अनेकों का राज्य। तो अनेक मतें चलेंगी तो बात कुछ भी नहीं बनेगी, सुख–समृद्धि नहीं हो सकती, और ही दुर्गति होती जाएगी। तो गुड़ियाँ बनाई हुई हैं। दस शीश वाला मनुष्य वास्तव में कोई नहीं होता, ये तो दस मतों के संगठित होने की बात है, जो दस धर्मों की दस विशेष आत्माएँ संगठित हो करके कार्य करती हैं और भारत में ही इनका गायन चलता है। ब्राह्मणों की संगमयुगी दुनिया की ही बातें हैं। जैसे झाड़ के चित्र में दस जड़ें दिखाई गई हैं। जड़ें भी होती हैं साकार और उनके बीज भी होते हैं साकार। तो दस शीश वाला मनुष्य नहीं होता है। रावण की स्त्री मंदोदरी दिखाते हैं, उनको 5 शीश नहीं दिखाते। भक्तिमार्ग में जो चित्र रावण का बनाया है, उसमें दसों शीश किसके दिखाते हैं– पुरुष के दिखाते हैं या स्त्री मुख भी दिखाते हैं? उसमें तो दस शीश पुरुष के दिखाते हैं। बाबा ने हमको बताया कि 5 विकार स्त्री के और 5 विकार पुरुष के। फिर भक्तिमार्ग में दसों सिर जो हैं, वो पुरुष के क्यों बनाय दिए? ये संगमयुग की यादगार है। संगमयुग में बीज–रूप आत्माएँ भी हैं तो आधारमूर्त आत्माएँ भी हैं। जो बीजरूप हैं, वो हैं जैसे बाप। बीज को बाप कहा जाता है और जो जड़ें हैं, वो हैं आधार। आधार को माता कहा जाता है, जिस आधार के आधार पर सारा वृक्ष खड़ा हुआ होता है। सारा परिवार माता के आधार पर चलता है; नहीं तो परिवार वा पारिवारिक व्यवस्था कैसे चलेगी? तो बताया कि रावण को दस सिर पुरुष के दिखाते हैं भक्तिमार्ग में, वो कहाँ की यादगार हुई? संगमयुग की यादगार। क्यों? कि जो 5 बीज हैं, वो तो पुरुष हैं ही हैं; लेकिन जो जड़ों में 5 हैं, उनमें भी कोई 5 पुरुष रूप हैं, जो स्त्री जाति को कंट्रोल करते हैं ब्राह्मणों की संगमयुगी दुनिया में; इसलिए अव्यक्त वाणी में बाबा ने इशारा किया था। बाबा ने कहा था– गाइड है एक शिवबाबा; ''अगर पांडव शक्तियों के गाइड बन करके रहेंगे तो यज्ञ में गड़बड़ पड़ेगी।'' (अ.वा.2.4.70 पृ.235 मध्य) तो ये रावण–राज्य की शूटिंग हो जाती है। जैसे महालक्ष्मी का चित्र दिखाते हैं, यह नहीं समझते– इनमें लक्ष्मी–नारायण दोनों आ जाते हैं। अंतर क्या है रावण में और महालक्ष्मी में? (ओमशांति)